

[Shrimati Gundu Sudharani]

provided by the Central Government. Secondly, industrial subsidies may be provided. Thirdly, the Forest Department may provide raw material, that is, wood, at low cost. Fourth, through Singareni, coal may be provided at a subsidised rate. Sufficient power may be provided at subsidised rate. Job security should also be provided to these workers.

I would again submit that because of these reasons, the only major factory, which was there in Warangal district, has been closed. I request the Government to please help this factory start again. Thank you, Sir.

SHRI ANANDA BHASKAR RAPOLU (Telangana): Sir, I associate myself with the matter raised by Shrimati Gundu Sudharani.

DR. K. KESHA RAO (Andhra Pradesh): Sir, I also associate myself with the matter raised by Shrimati Gundu Sudharani.

SHRI C.M. RAMESH (Telangana): Sir, I also associate myself with the matter raised by Shrimati Gundu Sudharani.

SHRI Y.S. CHOWDARY (Andhra Pradesh): Sir, I also associate myself with the matter raised by Shrimati Gundu Sudharani.

#### **Ban imposed by J & K Government on Kaunsar Nag Yatra**

**श्री अविनाश राय खन्ना** (पंजाब): सर देश भर में जो धार्मिक यात्राएं होती हैं, वे एक देश का दर्शन होती हैं और जहां पर वह यात्रा जाती है वहां की संस्कृति और जो धार्मिक आस्था है, उसको बढ़ाने के लिए होती है। यह यात्रा लोगों में धार्मिक भावना बढ़ाने के लिए होती है। मैं पंजाब से हूं और हमारे यहां जब भी होला-मोहल्ला में यात्रा होती है, तो गांवों से लोगों को फ्री ट्रांसपोर्टेशन और फ्री लंगर मुहैया कराया जाता है। ऐसी व्यवस्था में लोग वहां से आनंदपुर साहिब जाते हैं और यात्रा कर के वापस आते हैं।

इसी तरह वैली में कोंसरनाग यात्रा 1980 तक चलती रही। इस यात्रा का एक रूट वैली से और दूसरा रियासी से है। वैली के कश्मीरी पंडितों ने इस यात्रा को शुरू करने के लिए वहां डी.सी. से परमिशन ली। इस यात्रा के लिए लोगों व मीडिया में इतना उत्साह था कि 1980 के बाद यह यात्रा फिर शुरू हो रही है। यह यात्रा कश्मीरियत और कोंसरनाग की विचित्र लोकेशन को दिखाती है। यह यात्रा दुनिया भर के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती थी, लेकिन लोगों और मीडिया के इस यात्रा में उत्साह से कुछ लोगों को तकलीफ हुई। कश्मीर और कश्मीरियत में सद्भावना का जो माहौल चल रहा है, उसे डिस्टर्ब करने की बात शुरू की गई। इसके लिए उन्होंने वहां बंद का आह्वान किया, इस यात्रा को रोकने की बात कही। फिर वहां के एडमिनिस्ट्रेशन ने कोंसरनाग यात्रा के लिए दिल्ली से जो रूट एलॉट किया था, उस रोक दिया। इस कारण कश्मीरी पंडितों और खास तौर पर जो लोग वहां कश्मीरियत और कश्मीर की बात कर रहे हैं, उनके सेंटीमेंट्स बहुत हर्ट हुए हैं।

मैं दावे के साथ कहता हूँ कि ऐसी यात्रा से हजारों लोगो को घोड़े वाले, टेंट वाले और होटल चलाने वालों को रोजगार मिलता है। यह सिर्फ किसी संप्रदाय की बात नहीं है बल्कि कश्मीरियत की बात है, कोंसरनाग के सुंदर स्थल को देखने की बात है। वहां की सरकार कहती है कि टूरिस्ट जा सकता है, लेकिन यात्रा नहीं जा सकती।

सर, इस यात्रा के रोके जाने से समाज के लोगों के सेंटिमेंट्स हर्ट हुए हैं। मैं वहां की सरकार से निवेदन करता हूँ कि आज समय आया है जब इस यात्रा के कारण लोगों में सदभाव बढ़ेगा और वहां के लोग मिल जुलकर इस यात्रा को कम्प्लीट करेंगे। इसलिए वह इन बातों को बढ़ावा देने के साथ-साथ कश्मीर और कश्मीरियत के लिए काम करे। इस यात्रा को बंद करने की जरूरत नहीं है।

**श्री नारायण लाल पंचरिया** (राजस्थान): महोदय, मैं इस मेशन से स्वयं सम्बद्ध करता हूँ।

**श्री प्रभात झा** (मध्य प्रदेश): सर, मैं इस जीरो ऑवर मेशन से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

SHRI V.P. SINGH BADNORE (Rajasthan): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRIMATI GUNDU SUDHARANI (Telangana): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

**श्री अनिल माधव दवे** (मध्य प्रदेश): सर, मैं भी माननीय सदस्य के मेशन से एसोसिएट करता हूँ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Shri Ritabrata Banerjee.

**Centenary of Komagatamaru - An integral and inseparable  
event in Indian struggle for freedom**

SHRI RITABRATA BANERJEE (West Bengal): Mr. Deputy Chairman, Sir, 2014 marks the centenary of the epic voyage of Komagatamaru. It was on July 23, 1914 that Komagatamaru, which was anchored at the Vancouver Harbour since May 23, 1914, was forced to return when the Canadian authorities refused to allow the passengers to land and subjected them to inhuman harassment and repression for eight weeks. This is an event enshrined in golden letters in the long struggle of Indian people against the British colonial yoke.

Sir, our leader, Shri Sitaram Yechury, had been to Canada to attend this programme, the Centenary of Komagatamaru and the Ghadar Party. The Ghadar revolutionaries in our country played a glorious role for our independence. It was in 1915 that the Ghadar Party gave a slogan of independence, even eight years before it was done in the Ahmedabad Session of the Congress, where two Communist Leaders, Maulana Hasrat Mohani and Swami Kumaranand, raised the issue of independence.

During this period of time, another very epoch-making incident, world-changing incident, the Revolution in Russia in 1917, took place. This Revolution in Russia